Bihar Board Class 7 Hindi Notes Chapter 10 कुंभा का आत्म बलिदान

कुंभा का आत्म बलिदान Summary in Hindi

कहानी का सारांश – कुंभा बूंदी रियासत में रहने वाला हाड़ा राजपूत था। हाड़ा जाति के लोगों की वीरता की कहानी सुनते ही लोग भयभीत हो जाते थे। क्योंकि हाड़ा राजपूत मर सकते थे लेकिन दुश्मनों को बूंदी में प्रवेश नहीं करने दे सकते थे।

एक बार चितौड़ के महाराजा ने छोटी रियासत मानकर बूंदी को अपने कब्जे में करना चाहा। इसके लिए वे अपनी बड़ी सेना लेकर बूंदी पर हमला किया। भीषण युद्ध के बाद भी महाराणा पराजित हो गये।

पराजय के अपमान से महाराणा की मन:स्थिति गड़बड़ हो गई। वे प्रतिज्ञा कर बैठे कि जबतक बूंदी पर अपना झंडा नहीं फहराएंगे पानी तक नहीं पिएँगें।

लेकिन बूंदी रियासत पर कब्जा करना आसान नहीं। महाराणा को अपनी शक्ति बढ़ाने में कुछ समय तो लगता है। मंत्रियों ने सोचा महाराणा की प्रतिज्ञा कैसे पूरा करें। एक उपाय सूझा, नकली बूंदी बनाकर महाराणा से आक्रमण करवाकर प्रतिज्ञा पूरी करवा दी जाए । बात पक्की हो गई । नकली बूंदी का किला बना । लेकिन बिल्कुल बूंदी के किला जैसा । महाराणा की सेना में ही कुंभा काम करता था। जब उसने नकली बूंदी. का किला देखा तब बनाने वालों से जानकारी ली। पता चला महाराणा अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए नकली बूंदी पर आक्रमण कर और जीतकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेंगे।

हाड़ा जातीय कुम्भा ने महाराणा के इस अभियान को बूंदी का अपमान
समझा । उसने ठान ली कि जबतक हम जीवित हैं बूंदी का अपमान
नहीं देख सकते । उसने अन्य हाड़ा सैनिकों को भी बताया। सभी अपनी
मातृभूमि को अपमानित होने से बचाने के लिए दृढ़ संकल्प हो गये । अभियान को पूरा करने के लिए पूरी सैनिकों के साथ महाराजा नकली बूंदी के किला पर आक्रमण कर फतह के विचार से द्वार पर जाते हैं तो द्वार रक्षक जिनको आत्म समर्पण करना था। राणा के जान के दुश्मन बन गये। वाणों की बौछार से महाराजा घबड़ा गये । मात्र 20-25 हाड़ा राजपूतों ने महाराणा का मुकाबला तब तक करते रहे जब तक किला के द्वार पर स्थित सभी मारे नहीं गये । जब सभी मारे गये तब महाराणा नकली बूंदी के किला में प्रवेश किये।

वह व्यक्ति धन्य है जो अपनी मातृभूमि के रक्षार्थ अपना न्योछावर कर देता है।

https://www.evidyarthi.in/